



श्री शंभुजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासकम

C/o. शाह गोविंदजु वीरम, डेकटरी कम्पाउन्ड, मोंटा रोड, औरंगाबाद - ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासकम ज्ञापन पत्र ◆◆◆

अनुरोधमेव नं. जवेंकर

९

गुणित

१००

प्रथम वर्ष

विद्यार्थीनं नाम _____

प्रश्न-१ भाषी ज्ञान		प्रश्न-२ अंक व शब्दमां		(५)	भाषी	प्रश्न-५ संख्यामा ज्ञान	
(१) ज्ञान	(१) मात्रक	(१) अक्षर	(५) भाषी	(१) ५	(१) ५	(१) ५	(१) ५
(२) कर्तव्य	(२) विशाला	(२) अक्षर	(६) अक्षर	(२) १००	(२) १००	(२) १००	(२) १००
(३) नृप	(३) माधकवि	(३) अक्षर	(७) अक्षर	(३) ९	(३) ९	(३) ९	(३) ९
(४) विजयी	(४) कालसाहित्य	(४) अक्षर	(८) अक्षर	(४) ८३	(४) ८३	(४) ८३	(४) ८३
(५) कश्मीर	(५) संघ	(५) अक्षर	(९) अक्षर	(५) ८००	(५) ८००	(५) ८००	(५) ८००
(६) कुशल	(६) कंस	(६) अक्षर	(१०) अक्षर	(६) ९३	(६) ९३	(६) ९३	(६) ९३
(७) सिद्ध	(७) सरलता	(७) अक्षर	(११) अक्षर	(७) १२	(७) १२	(७) १२	(७) १२
(८) विरति	(८) वाङ्मयमिनी	(८) अक्षर	(१२) अक्षर	(८) ५००	(८) ५००	(८) ५००	(८) ५००
(९) दक्षिण	(९) शरीर	(९) अक्षर	(१३) अक्षर	(९) ८	(९) ८	(९) ८	(९) ८
(१०) गुलाबी	(१०) गर्भक	(१०) अक्षर	(१४) अक्षर	(१०) ४२	(१०) ४२	(१०) ४२	(१०) ४२
(११) विद्वान	(११) अक्षर	(११) अक्षर	(१५) अक्षर				
(१२) अक्षर	(१२) अक्षर	(१२) अक्षर	(१६) अक्षर				
(१३) अक्षर	(१३) अक्षर	(१३) अक्षर	(१७) अक्षर				
(१४) अक्षर	(१४) अक्षर	(१४) अक्षर	(१८) अक्षर				
(१५) अक्षर	(१५) अक्षर	(१५) अक्षर	(१९) अक्षर				
(१६) अक्षर	(१६) अक्षर	(१६) अक्षर	(२०) अक्षर				
(१७) अक्षर	(१७) अक्षर	(१७) अक्षर	(२१) अक्षर				
(१८) अक्षर	(१८) अक्षर	(१८) अक्षर	(२२) अक्षर				
(१९) अक्षर	(१९) अक्षर	(१९) अक्षर	(२३) अक्षर				
(२०) अक्षर	(२०) अक्षर	(२०) अक्षर	(२४) अक्षर				
(२१) अक्षर	(२१) अक्षर	(२१) अक्षर	(२५) अक्षर				
(२२) अक्षर	(२२) अक्षर	(२२) अक्षर	(२६) अक्षर				
(२३) अक्षर	(२३) अक्षर	(२३) अक्षर	(२७) अक्षर				
(२४) अक्षर	(२४) अक्षर	(२४) अक्षर	(२८) अक्षर				
(२५) अक्षर	(२५) अक्षर	(२५) अक्षर	(२९) अक्षर				
(२६) अक्षर	(२६) अक्षर	(२६) अक्षर	(३०) अक्षर				
(२७) अक्षर	(२७) अक्षर	(२७) अक्षर	(३१) अक्षर				
(२८) अक्षर	(२८) अक्षर	(२८) अक्षर	(३२) अक्षर				
(२९) अक्षर	(२९) अक्षर	(२९) अक्षर	(३३) अक्षर				
(३०) अक्षर	(३०) अक्षर	(३०) अक्षर	(३४) अक्षर				

+ + + + + + + =

रीमाई _____ न्यासनांनी सदी _____

१. पोथर युग :- आकाशमांडल उडता युग ने पोथर युग इहेवागं आवे हे पोथर युगो जे प्रकारना होय हे १) शीमज - नेमनी पांखो इवांटीवाणी होय जेवा युगो दान्त - स्फुर पोपट, शकली विगेरे २) यर्मज - नेमनी पांखो आमडाणी होय जेवा युगो दान्त - शागशीडिया. आ लंगे प्रकारना युगो मनुष्यलोड मां लेरी ल्यारे शीमजी पांखो विडायेली श्मने उडे ल्यारे पांखो भुल्ली रडे हे परंतु मनुष्यलोडनीजसर बीडयेली पांख श्मने भुल्ली पांखवाजायुगी उडतां, जेसतां, यालतां ते ते प्रकारनी पांखो रडे हे

२. भवत डेवि साहू सूत्राणे लावार्थ :- आ सूत्राद्वारा प लखत, प व्यैशवल श्मने प महविहेह मां रडेसा ने डोई पले साधुशो ने तला हंड डारा त्रव प्रकारे पापवाजा प्रवृत्ति करतां नधी, करावतां नधी करावतां नधी डे करतां ने श्मनुभोदन करतां नधी ने सर्वे साधुशोने प्रणाम करवागं आवे हे डिपर ज्हावेल पंदर कर्मभूमि मां आपणे सहेहे जेई शिकतां नधी अरेले सर्व साधुशोने त्रव्य लंघन करी शिकतां नधी परंतु आ सूत्राद्वारा सर्वे साधुशोने लाववंदन चाय हे विचरतां तीर्थंकरो ने पले प्रणाम चाय हे

३. सुलस गु मग शिंतन :- सुलस ना पिता जालसौरिक ने तीक्ष्ण पापकर्मना उदय ने डारेखा वारीर मां असह्य वेदना थनी हनी आ वेदना जेई सुलस शिंतववा लाखो डे पाप करवाकी लेना रंगो आ लवमां लोगाववा पडे हे ने प्रत्यक्ष देवाय हे परंतु परलोड मां दुर्गति योडकस होय हे. दुःख लोगाववानो समय पले अजर नधी. लाव अराज होय श्मने डारणो लव अराज चाय श्मने लव अराज तो लाव अराज चाय आवु सके सालवाधी परिणाम शु होय हे आवा शिंतन की विचार हे डे मारे दुर्गतिमां लई अय लेवा पाचो करवा नधी.

४. पार्वनाथ प्रत्युगो छडो लव :- आरमा अख्युल देवलोड मांकी ब्यलीजे श्री पार्व प्रत्युगो युव छडो लवे कंठुडियना पश्चिम महाविहेहमा गंधिलावती विजय मां शुलंकर नगरीमां लज्जनाल मागे वीम तशीडे हायो. तेमना राजयडीण धरव्यान नीर्धंकर क्रीमंकर प्रत्यु पधार्थी. तेमनी देशाना सांसानी लज्जनाल राम हिस्ति धई अगियार अंगानो अलन्यास करी नंधाशारण लखिधमोपनी. आ लखिध थी सुकरछ विजयमां जवलन पर्वण डिपर जेई डायो लसार्गे रड्या. उमठने युव लिल्ल धयो नेहे साधुने लाहा आयु. आलाना धावी पार्वनाथ प्रत्युगो युव अरुणधरके.

५. प्रज्ञा श्मने अज्ञान परिषड :- प्रज्ञा परिषड अरेले नेमनी प्रज्ञा सारी होय, सारी शीते लगी व्राजतां होय, लहुअंग होय, अन्धो द्वारा प्रुधसा प्रमोना योग्य उत्तर मांकी शिकतां होय छतां तेक ते माट अहंडार डे ने प्रज्ञेनु वर्तन करे नही. दान्त-परदहतनो पूर्वल्प. अज्ञान परिषड शेके कर्मना प्रलावे प्रज्ञा सूक्ष्म न भाववाधी, अन्धो द्वारा प्रुधयेला प्रमोना उत्तरो सांतोषमर्थ डे योग्य शीते आपी शिकता नही होय छतां तेनो अेद करे नही उलटुं अज्ञान ने समता की धारण करे तेने अज्ञान परिषड कहेवाय हे. उदाहरण - भासापुष गुनि.